विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत दिनांक 12-01—2021

वर्ग पंचम शिक्षक राजेश कुमार पाण्डेय

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित

दीर्घ संधि के चार नियम होते हैं!

सूत्र-अक: सवर्णे दीर्घ: अर्थात् अक् प्रत्याहार के बाद उसका सवर्ण आये तो दोनो मिलकर दीर्घ बन जाते हैं। ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ, ऋ के बाद यदि ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ, ऋ आ जाएँ तो दोनों मिलकर दीर्घ आ, ई और ऊ, ॠ हो जाते हैं। जैसे -

(क) अ/आ + अ/आ = आ

अ + अ = आ -> धर्म + अर्थ = धर्मार्थ

अ + आ = आ -> हिम + आलय = हिमालय

अ + आ =आ-> पुस्तक + आलय = पुस्तकालय

आ + अ = आ -> विद्या + अर्थी = विद्यार्थी

आ + आ = आ -> विद्या + आलय = विद्यालय

(ख) इ और ई की संधि

इ + इ = ई -> रवि + इंद्र = रवींद्र ; मुनि + इंद्र = मुनींद्र

इ + ई = ई -> गिरि + ईश = गिरीश ; मुनि + ईश = मुनीश

ई + इ = ई -> मही + इंद्र = महींद्र ; नारी + इंदु = नारींदु

ई + ई = ई -> नदी + ईश = नदीश ; मही + ईश = महीश .

(ग)उ और ऊ की संधि

उ + उ = ऊ -> भानु + उदय = भानूदय ; विधु + उदय = विधूदय

उ + ऊ = ऊ -> लघु + ऊर्मि = लघूर्मि ; सिधु + ऊर्मि = सिंधूर्मि

ऊ + उ = ऊ -> वधू + उत्सव = वधूत्सव ; वधू + उल्लेख = वधूल्लेख

ऊ + ऊ = ऊ -> भू + ऊर्ध्व = भूर्ध्व ; वधू + ऊर्जा = वधूर्जा

(घ)ऋ और ॠ की संधि

ऋ + ऋ = ॠ -> पितृ + ऋणम् = पित्रणम्

अन्य महत्वपूर्ण प्रष्ठ:

स्वर संधि - अच् संधि

दीर्घ संधि - अक: सवर्णे दीर्घ:

गुण संधि - आद्गुण:

वृद्धि संधि - ब्रध्दिरेचि

यण् संधि - इकोऽयणचि

अयादि संधि - एचोऽयवायाव:

पूर्वरूप संधि - एङः पदान्तादति

पररूप संधि - एडि पररूपम्

प्रकृति भाव संधि - ईदूद्विवचनम् प्रग्रह्यम्